ओ३म्

ब्रह्माकुमारियों के षड़यन्त्र से सावधान

स्व० स्वामी पूर्णानन्द जी सरस्वती
(पूर्वनाम-श्री पं० पूर्णचन्द्र जी आर्य, सिद्धान्तभूषण)
भूतपूर्व महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, लाहौर
आर्य समाज, बड़ौत जिला बागपत (उ०प्र०)
आर्य समाज, बुढ़ाना द्वार, मेरठ

ओ३म्

ब्रह्माकुमारियों के षड़यन्त्र से सावधान

लेखक—
पूर्णचन्द आर्य पुरोहित
आर्य समाज, मेरठ

आर्य समाज तथा आर्यस्त्री समाज,
बुढ़ाना द्वार, मेरठ
द्वारा प्रचारित

प्रथम संस्करण : 1956

द्वितीय संस्करण : 2019

प्रकाशक :

वेद प्रकाश तोमर

पुस्तक प्राप्ति व पत्राचार हेतुः

डॉ० वीरोत्तम तोमर

डी–8, आदर्श नगर, मेरठ–250 001

मो.: +91-9837071782

ई–मेल.: veerottam@gmail.com

ओ३म्

भारतीयता एवं वैदिक धर्म के

सच्चे संदेशवाहक

स्व. स्वामी पूर्णानन्द जी सरस्वती

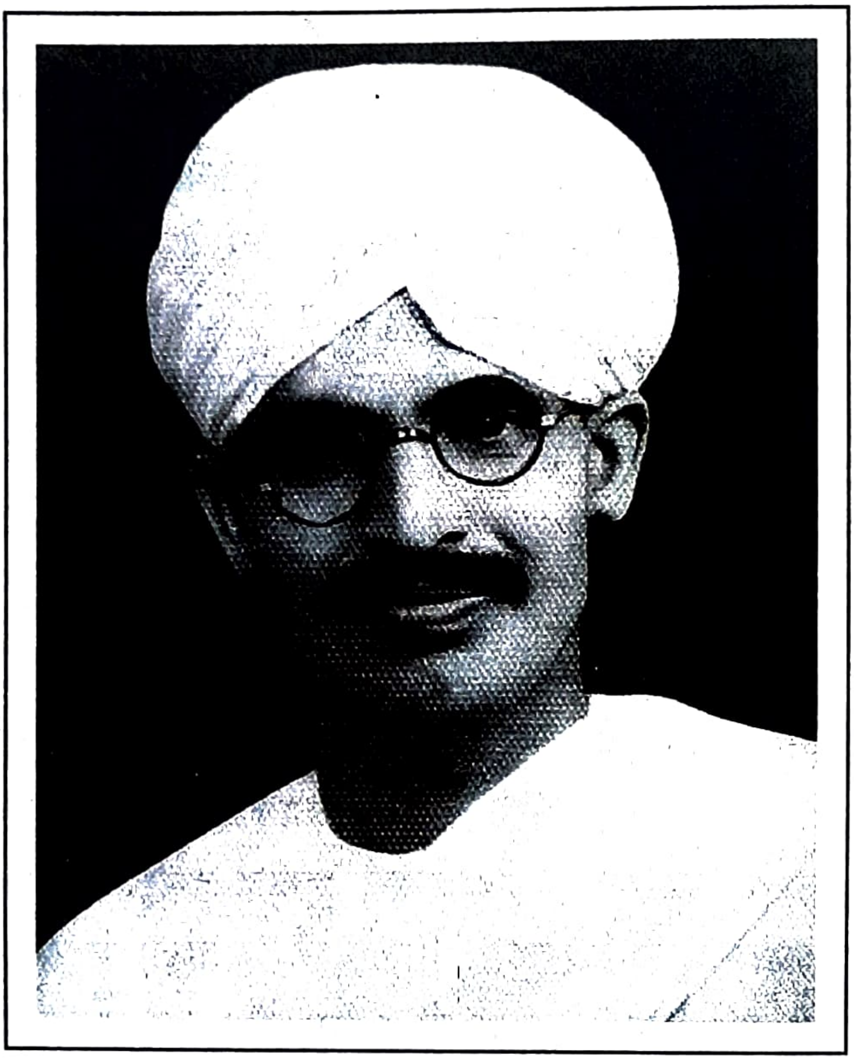

13 मार्च 1900 – 20 दिसम्बर 1985

सम्पादक की कलम से ....

स्व० स्वामी पूर्णानन्द जी सरस्वती आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान, महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, एवं वैदिक संस्कृति के सच्चे पुरोधा थे। उनका पूरा जीवन हिन्दू धर्म में फैली कुरीतियों व पांखण्डों के नष्ट करने में व्यतीत हुआ। उनके महर्षि दयानन्द सरस्वती के सच्चे अनुनायी होने का प्रमाण है कि जहाँ भी उन्हें वैदिक सिद्धान्तों के विपरीत बातें पता चली तथा महसूस किया कि ये कार्य हिन्दू धर्म को क्षीण कर रहे हैं तभी उन्होंने निर्भीकता से अपने लेखनी उठा ली। प्रस्तुत पत्रक स्वामी जी द्वारा सन् १९५६ में प्रथम बार प्रकाशित करा, पूरे इलाके में बंटवाया गया था। उस समय स्वामी जी पं० पूर्णचन्द्र आर्य के नाम से विख्यात थे तथा बुढाना द्वार, आर्य समाज, मेरठ में उपदेशक के रूप में अपनी कर्मठ शैली से वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार कर रहे थे। ब्रह्माकुमारी समाज के प्रचार को बढ़ते देख आर्य समाज तथा आर्य स्त्री समाज बुढाना द्वार द्वारा आग्रह पर यह पत्रक प्रकाशित हुआ जिसमें ब्रह्माकुमारी समाज के संस्थापक लेखराज के कुत्सित कारनामों का एक कच्चा चिट्ठा है। जैसे पतीले में चावल पके हैं या नहीं को जानने हेतु ऊपर के कुछ चावलों को ही जाँचकर पूरे पतीले के चावल पक गये हैं या नहीं जान सकते है, उसी प्रकार इस पत्रक के माध्यम से ब्रह्मकुमारी समाज द्वारा चलाये जा रहे कुत्सित षड़यन्त्र की जानकारी मिलती है। वर्तमान में ब्रह्माकुमारी समाज की सक्रियता को फिर से बढ़ता देख इस पत्रक को मूल रूप में ही वैदिक संस्कृति के मौलिक सिद्धान्तों की रक्षा हेतु प्रकाशित कराया जा रहा है।

डॉ० वीरोत्तम तोमर

ओ३म्

ब्रह्माकुमारियों के षड़यन्त्र से सावधान

सब हिन्दु धर्मावलम्बी सज्जनों की सेवा में निवेदन किया जाता है कि लगभग दो वर्ष से मेरठ में ब्रह्मा कुमारियों का एक गुप्त आन्दोलन चल रहा है जो हिन्दु धर्म और हमारी संस्कृति के मौलिक सिद्धांतों को जड़ मूल से उखाड़ कर फैंकने में प्रयन्तशील है। आर्य-समाज इस को आशंका की दृष्टि से देखता है दैवयोग से दिनांक ११.१२.५६ ई० को हमें ब्रह्मा कुमारियों की ओर से उनके एक उत्सव में सम्मिलित होने का निमन्त्रण मिला और साथ ही हमें यह भी अश्वासन मिला, कि ब्रह्मा कुमारियों के उपदेश के पश्चात् आप लोगों को शंका समाधान के लिये समय दिया जायेगा। हम ११.१२.५६ को सायं ६ बजे शर्मा स्मारक में पहुंच गये, जहाँ उनका उत्सव हो रहा था। हमने दो घण्टे तक उनके व्याख्यानों को सुना और व्याख्यान की

समाप्ति पर शंका-समाधान के लिए समय मांगा, परन्तु उन्होंने उत्तर देना स्वीकार न किया, और टाल दिया कि हमारा नियम बहस करने का नहीं। उनके इस व्यवहार से हमें निश्चय हो गया कि यह केवल एक षड़यन्त्र है जिस के द्वारा हिन्दु देवियों को अपने पाखण्ड जाल में फंसाना है। इसलिए हम हिन्दु भाई बहनों को सावधान करते हैं कि यह इनके भुलावें में ना आवें।

पोल खोलने हेतु उनकी पुस्तकों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:-

२० वर्ष पूर्व सिन्ध के एक व्यक्ति **लेखराज** ने एक कीर्तन मण्डली बनाई जिसमें केवल स्त्रियाँ ही जाती थी, वह कीर्तन मण्डली लेखराज के घर ही लगती थी, सारी रात्रि भर कीर्तन और रास-लीला होती थी। अपने पाखण्ड पर परदा डालने के लिये इस मण्डली का नाम **'ओ३म् मण्डली'** रक्खा गया। जब लेखराज के पास पर्याप्त, संख्या में कुंआरी कन्याएँ और विवाहिता स्त्रियाँ आने जाने लगीं, तो उसने कहना प्रारम्भ किया कि भगवान चतुर्भुज विष्णु ने मेरे अन्दर प्रवेश किया हैं। मैं

गोपी बल्लभ भगवान् कृष्ण हूँ। इस महाघोर कलिकाल में पाप बहुत बढ़ रहे हैं उनको मिटाने के लिये मेरे शरीर में भगवान् का अवतरण हुआ है, अपने पास आने वाली कन्याओं और स्त्रियों को कहा कि तुम पूर्व जन्म की गोपियाँ हो, उन में से एक को राधा बतलाया। स्त्रियों को कहा कि तुम्हारे सम्बन्धी (भाई, पति, माता, पिता इत्यादि) तुम्हारे विकारी सम्बन्धी हैं, वे तुम्हारे वास्तविक सम्बन्धी नहीं, वे तो तुम्हारे शत्रु हैं, वे कंस और जरासन्ध हैं जो तुम्हें गृहस्थ रूपी जेल में रखना चाहते हैं। तुम्हारा नित्य सम्बन्ध तो मेरे साथ है। इसलिये यदि तुम्हारे सम्बन्धी तुम्हें मेरे पास आने से रोकें तो मत मानो। लेखराज के इस प्रचार का यह प्रभाव हुआ कि बहुत सारी कुआरी कन्याओं और स्त्रियों ने अपने सम्बन्धियों की मर्यादाओं के अन्दर रहने से इन्कार कर दिया। इससे सिन्ध की हिन्दु जनता कुलबुला उठी।

उन कन्याओं के वारिसों ने लेखराज के ऊपर मुकदमा चलाया, जिसके फल स्वरूप न्यायालय ने **लेखराज को अपराधी ठहरा कर जेल भेज दिया** और सरकार ने ओ३म् मण्डली पर प्रतिबन्ध लगा

दिया। जेल से छूटने के पश्चात् लेखराज करांची से भाग कर भारत में आ गया और **माऊंट आबू** पर अपना अड्डा बनाकर उस ही पाखण्ड को भारत में फैलाना आरम्भ कर दिया और 'ओ३म् मण्डली' का नाम बदल कर "**राजस्व अश्वमेध अविनाशी ज्ञान यज्ञ**" रक्खा। इस मण्डली में इस समय ५५ स्त्रियाँ और ६८ कन्याएँ हैं, जो अपने माता, पिता और भाई बन्धुओं को छोड़कर अपने घरों से भाग आई हैं। इन्हों ने १४ बड़े-बड़ें नगरों में अपने केन्द्र खोले हुए हैं। एक-एक केन्द्र में कई-कई स्त्रियाँ रहती हैं। हिन्दुओं को धोखे में डालने के लिये इन स्त्रियों का नाम ब्रह्मा कुमारियां रक्खा हुआ है। वे लोगों के घरों में जाती हैं और नौजवान स्त्रियों को सब्ज़ बाग दिखाकर अपने काबू में कर लेती हैं। शुरू-शुरू में भगवान् कृष्ण आदि हिन्दु देवताओं का नाम लेकर और श्रीमद्भगवद्गीता की बातें सुनाकर उन पर यह प्रभाव डालती हैं कि हम भी हिन्दु ही हैं और हम तुम लोगों को सहज योग सिखाती हैं। परन्तु आहिस्ता आहिस्ता जब स्त्रियाँ इनके जाल में फंस जाती हैं तो हिन्दु धर्म और उसके धार्मिक ग्रन्थ वेद, उपनिषद्, गीता,

महाभारत, रामायण, स्मृतियाँ, पुराण, इतिहास और दर्शन शास्त्रों की निन्दा करने लगती हैं। वे हिन्दुओं की भक्ति, पूजा, पाठ जप, तप, यंम नियम, संध्या और गायत्री को झूठा बतलाती हैं और कहती हैं कि लेखराज का ध्यान करने से ही इस लोक और परलोक की सिद्धि को सकती है और कि लेखराज ही परम पिता परमात्मा त्रिमूर्ति भगवान् शिव हैं। उनकी पुस्तकों के कुछ उदाहरण पाठकों की जानकारी के लिये नीचे दिया जाता है:-

१. **घोर कलहयुग विनाश** नाम की पुस्तक के पृष्ठ १२ पर लिखा है कि "बुत परस्त हिन्दु कहलाने वाली कौम" व्यभिचारी भक्ति मार्ग में फंसकर इतना तो बुत परस्त बन गई है जो अपने शास्त्रों में अपने देवताओं के अनेक मनोमय चित्र बनाकर उन्हीं को कलंकित किया है। वे अपने शास्त्रों में लिखते हैं कि ब्रह्मा अपनी बेटी सरस्वती पर मोहित हुआ। शिव मोहनी के ऊपर मोहित होकर उसके पिछाड़ी पड़ा।"

२. इस ही पुस्तक के पृष्ठ १३ पर लिखा है:- वास्तव में परमात्मा का अवतार एक ही है जो

कल्प कल्प के संगम पर एक ही बार भारतवर्ष में साधारण स्वरूप में बूढ़े तन (लेखराज के बूढ़े शरीर) गुरू ब्रह्मा नाम से प्रत्यज्ञ होता है, नाकि अनेक रूपों से अनेक बार जैसे मूढ़ मति हिन्दू लोग शास्त्रों में दिखाते हैं।

३. फिर उसी पृष्ठ पर लिखा है:-"हिन्दु लोगों के बड़े बड़े गुरू, विद्वान्, आचार्य, पण्डित इत्यादि इतना भी नहीं जानते कि गीता में जो महा वाक्य नूधे हैं वे किस के हैं और भागवत में किस का चरित्र गाया गया है। वे समझते हैं कि गीता श्रीकृष्ण ने उच्चारण की है, और भागवत में भी श्री कृष्ण का जीवन चरित्र नूधा हुआ है। जिस कारण कृष्णम् बन्दे जगत गुरूम् गाते हैं। यही इन्हों की बड़ी भारी भूल है"।... श्रोमणी भगवद्गीता से हम सिद्ध कर सकते हैं कि गीता में श्रीकृष्ण के महावाक्य नहीं हैं बल्कि परमात्मा त्रिमूर्ति गुरू ब्रह्मा (लेखराज के महावाक्य हैं।)

४. "रामायण भी श्री रामचन्द्र का जीवन चरित्र सिद्ध नहीं करती... वास्तव में रामायण तो एक नावल (उपन्यास) है जिसमें तो १०१ प्रतिशत

एक सौ एक प्रतिशत मनोमय गप शप डाला गया है'' उस ही पुस्तक का पृष्ठ १४।

५. फिर उस ही पुस्तक के पृष्ठ १६ पर लिखा है:- ''पिता श्री परमात्मा गुरू ब्रह्मा की कल्प पहले वाली गायी गीता में महा वाक्य है कि भक्ति मार्ग के अनेक प्रयत्न जैसे कि वेद अध्ययन, यज्ञ, जप, तप, तीर्थ, वृत्त, नियम, दान, पुण्य, संध्या, गायत्री, मूर्ति पूजा, प्रार्थना इत्यादि करने से मैं नहीं मिलता।

६. **ब्रह्मा कुमारियों की संस्था का परिचय** नाम की पुस्तक में लिखा है-''भागवत प्रसिद्ध गोपियां श्री ब्रह्मा की है न कि श्री कृष्ण की' पृष्ठ ४

७. भगवान कृष्ण को योगीराज अथवा जगत गुरू अथवा जगत पिता नहीं कहा जा सकता... भगवान कृष्ण सृष्टि को ज्ञान नहीं देते... पृष्ठ ६

८. घोर कलहयुग विनाश में लिखते हैं ''हर एक नर और नारी अपने से पूछे कि मैं अपने परम पिता निराकार परमात्मा और साकार ईश्वर पिता गुरू ब्रह्मा और मातेश्वरी श्री सरस्वती आदमी और बीवी (हव्वा) के नाम रूप

निवास स्थान और अवतार धारण करने के समय को जानता हूँ। पृष्ठ १

९. उसी में लिखा है "जो साकार विश्व पिता आदि देव त्रिमूर्ति गुरू ब्रह्मा, दैवी, पिता इब्राहीम, बुद्ध और क्राइस्ट है जो हर एक कल्प-कल्प अपने-अपने समय पर अपने-अपने वारिसों सहित अपना-अपना देवी-देवता इस्लामि, बौद्ध और कृश्चन घराना स्थापन करने अर्थ निमित बने हुए हैं" पृष्ठ २

पाठक इस थोड़े से लेख से समझ सकते हैं कि हिन्दुओं को अपने स्वधर्म से भ्रष्ट करने के लिए ब्रह्मा कुमारियों का यह कितना भयंकर षड़यन्त्र रचा हुआ है। इसलिये हिन्दुमात्र से सानुरोध निवेदन है कि आगामी विनाश को दृष्टि में रखकर भेड़ों की खाल में ढकी हुई इन भेड़िनों को अपने घरों में आने से सर्वथा रोक दें और अपने स्त्री बच्चों को इनकी काली करतूतों से परिचित करा देवें। इनके विशेष परिचय के लिये शीघ्र ही और साहित्य आप की सेवा में प्रस्तुत किया जावेगा।

लेखक-

लेखक की प्रकाशित कुछ अन्य पुस्तकें

१. वृक्ष जीवधारी हैं

बहुत समय से आर्य विद्वानों में इस विषय पर मतभेद चला आ रहा है कि 'वृक्षों में जीव है या नहीं?' श्री स्वामी दर्शनानन्द पं० गङ्गा प्रसाद उपाध्याय व आज के भी अनेक विद्वानों का मत है कि "वृक्ष जड़ हैं।" दूसरी ओर पण्डित गणपति शर्मा व कई विद्वानों का विचार रहा है कि वृक्षों में जीव है। यहाँ भी उल्लेखनीय है कि वनस्पति-विज्ञान भी वृक्षों को जड़ स्वीकार नहीं करता है। इस महत्त्वपूर्ण विषय को तर्क की कसौटी बड़े वैज्ञानिक ढंग से श्री पूर्णचन्द्र शास्त्री (वर्तमान स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती) जी ने अपूर्व विश्लेणात्मक शैली में सुलझा दिया है और उन्होनें वेदों तथा ऋषि दयानन्द की मान्यता के आधार वृक्षों में जीव की सत्ता को सिद्ध कर दिया है। "वृक्ष जीवधारी है" नामक यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई है।

आज तक वृक्षों को जड़ मानने वाले विद्वान् १३ वर्षों में ... का उत्तर नहीं दे पाये, क्योंकि पुस्तक में तर्क व अकाट्य हैं।

२. ब्रह्मचारी कृष्णदत्त बनाम शृंगी ऋषि पोल-प्रकाश

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त (बरनावा-मेरठ) को शृंगी ऋषि का अवतार मानने का भ्रम आर्य समाजियों में भी बढ़ता चला गया।

व्यापक रूप से फैलते जा रहे इस नवीन पाखण्ड को दूर करने के लिये ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के सुप्तावस्था में दिये गये सैकड़ों प्रवचनों के संग्रह को पुस्तकों में बड़ी ऊहापोह से पढ़ा, वेदों और ऋषि दयानन्द की आड़ में यज्ञों के प्रदर्शन करके कुछ स्वार्थी तत्त्वों के सहयोग से यह मधु-मिश्रित विष आर्य-जनता को भी पिलाया जा रहा था। श्री स्वामी पूर्णानन्द जी सरस्वती ने उक्त पुस्तक लिखकर आर्य सज्जनों को सचेत किया। इस पुस्तक की अनेक उच्च-कोटि के विद्वानों ने भी प्रशंसा की है। इस पुस्तक के विषय में अधिकृत विद्वानों की सम्मतियाँ भी प्रकाशित कराई हैं।

३. मानव शरीर और जीवात्मा

आर्य विद्वानों में इस विषय पर मतभेद चला आ रहा है कि मानव-शरीर में आत्मा का स्थान छाती वाले हृदय में है या शिरस्थ हृदय में? इस आध्यात्मिक समस्या को सुलझाने का महान प्रयास श्री स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी ने इस पुस्तक में किया है। स्वामी जी ने वेदादि प्रमाणों, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका उपनिषदों, नाड़ी-विज्ञान व प्रत्यक्ष विज्ञान के विस्तृत विवेचन से प्रमाणित किया है कि "जीवात्मा का स्थान शिरोभाग में ही है।"

४. योगी का आत्म-चरित्र एक षडयन्त्र है

जिस प्रकार योगिराज श्री कृष्ण के उदात्त जीवन चरित्र को श्रीमद् भागवत पुराण में पंडित वोपदेव ने

मलिन कर रख दिया, इसी प्रकार महर्षि दयानन्द के जीवन में काल्पनिक बातें और चमत्कारों को जोड़कर सस्ती लोक-प्रियता के इच्छुक पंडित दीन बन्धु शास्त्री और योगी सच्चिदानन्द जी ने एक पुस्तक लिखी है **"योगी का आत्म-चरित्र"**

(एक अज्ञात जीवनी)।

यद्यपि उस समय जागरूकता के अभाव में सार्वदेशिक सभा का भी आंशिक सहयोग इस पुस्तक के प्रकाशन में मिल गया, फिर भी बाद में अनेक माननीय और अधिकृत विद्वानों ने इस पुस्तक को झूठ का पुलन्दा बताया। डाक्टर भवानीलाल भारतीय ने इसे एक नवीन उपन्यास बताया व एक विद्वान् ने इसे पुराण की संज्ञा दी।

इस पुस्तक के जबरदस्त खण्डन में सन् १९७३ ई० में ही श्री स्वामी पूर्णानन्द जी सरस्वती ने "आर्य मर्यादा" में ३२ लेख लिखे थे। उन लेखों व इस विषय से सम्बन्धित सामग्री व उपयोगिता को समझते हुये उस समस्त सामग्री को इस पुस्तक को प्रकाशित कराया गया है। इस पुस्तक के प्रमाण अकाट्य सिद्ध हुये हैं। निर्वाण शताब्दी (१९८३) में प्रकाशित ग्रन्थ "नव जागरण के पुरोधा ऋषि दयानन्द" में भी इस पुस्तक की चर्चा आई है। इस पुस्तक के अधिकाधिक प्रचार से ऋषि दयानन्द के पावन जीवन की सुरक्षा हो सकेगी।

ये सभी पुस्तकें प्राप्त करने का पता—

डॉ० वीरोत्तम तोमर

D-8, आदर्श नगर, मेरठ

जिला मेरठ (यू.पी.) 250611

e-mail : veerottam@gmail.com

अप्रकाशित पुस्तकें

इनके अतिरिक्त लेखक की अनेक महत्त्वपूर्ण पुस्तकें अभी अप्रकाशित हैं जैसे—

१. इस्लाम मत पर भारत के मुसलमान भाइयों से एक बिरादराना अपील।

२. ईसाई मत पर—ईसा के मृत्यु का रहस्य। आप ने “दयानन्द का योग” विषय पर लेख लिखे हैं।